यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु रामा

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2017

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 तत्व

पूर्णांक : 100

नाम.....पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम.....जन्मतिथि.....मोबाइल.....रोल नं.....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर, दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान है तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

दिसाणुवाय का थोकड़ा — अंक 30

प्रश्न 1. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिएः- **10**

1. कृष्ण पाक्षिक जीव किस दिशा में बहुत उत्पन्न होते है ?

.....

2. पुष्पाकीर्ण विमान किस दिशा में नहीं है ?

.....

3. मानस सरोवर कितना लम्बा चौड़ा है ?

.....

4. किस दिशा में पोलार अधिक है ?

.....

5. पूर्व और पश्चिम दिशाओं में किसके द्वीप और राजधानियाँ है ?

.....

6. कौन से देवता चारों दिशाओं में प्रायः तुल्य है ?

.....

7. समुच्चय जीव किस दिशा मे सबसे थोड़े है ?

.....

8. भाव दिशा कितनी है ?

.....

9. सलिलावती और वप्रा विजय किस दिशा में ?

.....

10. गौतम द्वीप किस समुद्र में है?

.....

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :- **10**

1. पृथ्वीकाय के जीव सबसे थोड़े .....दिशा में है।
2. .....दिशा की अपेक्षा दक्षिण दिशा में अप्पकाय अधिक है।
3. वायुकाय पूर्व दिशा में सबसे कम है क्योंकि वहाँ .....पृथ्वी अधिक है।
4. नैरयिक .....पृथ्वी में सबसे अधिक है।
5. आठवें देवलोक में पश्चिम दिशा में प्रायः .....पाक्षिक ही उत्पन्न होते है।
6. पश्चिम दिशा में पूर्व दिशा की अपेक्षा .....देव विशेषाधिक है।
7. .....दिशा में मनुष्य का वास सबसे अधिक है।
8. जहाँ .....अधिक हैं वहाँ सात बोलों के जीव भी अधिक है।
9. पूर्व दिशा की अपेक्षा द्वीन्द्रिय जीव .....दिशा में विशेषाधिक है।
10. दक्षिण और .....दिशा से जीव सबसे थोड़े सिद्ध होते हैं।

प्रश्न 3 नीचे दिए गए बोल सबसे कम और सबसे अधिक किस दिशा में लिखिए ? **10**

(पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण)	सबसे कम	सबसे अधिक
1. मनुष्य स्त्री	.....	.....
2. असुरकुमार	.....	.....
3. दूसरी पृथ्वी के नैरयिक	.....	.....
4. तिर्यंच पंचेन्द्रिय	.....	.....
5. सनत् कुमार देव	.....	.....

6. बादरतिउकाय ....

7. व्यन्तर देव ....

8. अप्पकाय ....

9. अग्रबीज ....

10. नक्षत्र देव ....

गमक का थोकड़ा

अंक 70

प्रश्न 1 अंको के उत्तर दीजिए :- **10**

1. मनुष्य युगलिक वैकिय के घर में जावे तो कितने बोलों का णाणत्ता पड़ता है?

2. 2805 के गमक में 2 भव के कुल कितने गमक है ?

3. पहली पृथ्वी और भवपति के घर में संज्ञी मुनष्य जावे तो कितने गमक होते हैं ?

4. ज्योतिषी में जाने वाले स्थलचर युगलिक की उत्कृष्ट अवगाहना कितनी है ?

5. शंख का जीवकाल करके जघन्य गमक से हीरा रूप में उत्पन्न होता है तो कितने बोलों का णाणत्ता पड़ता है?

6. वाणव्यत्तर में जाने वाले मनुष्य युगलिक की जघन्य आयुष्य कितनी होती है ।

7. अनुत्तर विमानवासी देवों के कितने घर इस थोकड़े में बताए गए हैं ?

8. दूसरे देवलोक के घर में कितने जीव जाते है ?

9. क्रोड पूर्व की आयुष्य वाले संज्ञी मुनष्य की अवगाहना कितनी होती है ?

10. जलचर छठे देवलोक में जघन्य या उत्कृष्ट किसी भी गमकों से जावे तो कुल कितनी नाणता पड़ता है ?

प्रश्न 2. सही विकल्प का चयन कीजिए :- **10**

1. मनुष्य के घर में असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जाता है तो उ. कितनी स्थिति पाता है। ( )

(अ.) क्रोड पूर्व (ब.) पल का असंख्यातवां भाग (स.) पल (द.) 84 लाख वर्ष

2. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में तीसरे गमक से संज्ञी मनुष्य जावें तो जघन्य कालादेश कितना होगा ? ( )

(अ.) अन्तर्मुहूर्त अधिक क्रोड पूर्व (ब.) अन्तर्मुहूर्त्त तीन पल

(स.) पृथ्क्त्वमास अधिक तीन पल (द.) क्रोडपूर्व अधिक तीन पल

3. असंख्याता उत्पन्न होने के गमक कितने हैं ? ( )

(अ.) 1851 (ब.) 1859 (स.) 1815 (द.) 1895

4. ज्योतिषी में जाने वाले युगलिक मनुष्य की जघन्य अवगाहना कितनी होती है ? ( )

(अ.) एक गाऊ (ब.) एक गाऊ झाझेरी (स.) तीन गाऊ (द.) 900 घनुष झाझेरी

5. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में असंज्ञी मनुष्य जावे तो उत्कृष्ट कितनी स्थिति पाता है ? ( )

(अ.) 3 पल (ब.) क्रोड़पूर्व झाझेरी (स.) क्रोड़पूर्व (द.) कोई भी नहीं

6. जघन्य जघन्य भव उत्कृष्ट 8 भव के औधिक गमक कितने हैं ? ( )

(अ.) 520 (ब.) 502 (स.) 624 (द.) 621

7. दो गाऊ झाझेरी की अवगाहना वाला तिर्यंच युगलिक कौन से देवों मे उत्पन्न होता है ? ( )

(अ.) भवनपति (ब.) वाणव्यतर (स.) वैमानिक (द.) ज्योतिषी

8. भव स्थान नौवा में किन घरों का वर्णन है? ( )

(अ.) 9 वें दवेलोक से नवग्रैवेयक (ब.) सर्वार्थ सिद्ध विमान

(स.) भवनपति से दूसरा देवलोक (द.) सातवी पृथ्वी

9. औदारिक के घरों से वैकिय के घरों में आने के आगति स्थान कितने है ? ( )

(अ.) 101 (ब.) 102 (स.) 118 (द.) 220

10. पांचवे गमक से जीव सातवीं पृथ्वी में जाता हैं तो कितने भव करता है ? ( )

(अ.) ज.3 भव उत्कृष्ट 5 भव (ब.) 3 भव

(स.) 2 भव (द.) जघन्य 3 भव उत्कृष्ट 7 भव

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– **10**

1.....युगलिक की जघन्य अवगाहना पृथक्त धनुष की होती है।

2. पृथक्त्व वर्ष की वय वाले मनुष्य की अवगाहना पृथक्त्व .....की होती है।

3. सम्यग् दृष्टि युगलिक .....देवों में जाते हैं।

4. ईशान देवलोक से आया हुआ संज्ञी मनुष्य .....मे काल नहीं करता है।

5. तेउकाय के घर में असंज्ञी मनुष्य .....गमक से जाता है।

6. वाणव्यत्तंर देवों में जाने वाला स्थलचर युगलिक नियमा.....होता है।

7. अर्द्ध नाराच संहनन वाला काल करके .....देवलोक तक जाता है।

8. .....संहनन में 500 धनुष की अवगाहना हो सकती है।

9. पृथ्वीकाय के घर में संज्ञी मनुष्य जाता है तो .....उत्पन्न होते हैं।

10. .....स्थिति हो तो आठ भव से ज्यादा नहीं करते हैं।

प्रश्न 4 पहचानों मैं कौन हूँ– **10**

1. मेरी आयु क्रोड पूर्व झाझेरी है, मनुष्य हूँ, मैं कर्मभूमि में ही में पाया जाता हूँ।

.....

2. मैं अन्तमुर्हूत्त में हजार योजन का हो जाता हूँ।

.....

3. सभी जीवों में मेरी अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग से ज्यादा नहीं होती है।

.....

4. मुझसे दो दृष्टी पायी जाती है और मेरी दृष्टि बदलती नहीं है।

.....

5. मेरी उत्कृष्ट स्थिति 20 सागरोपम है, मनुष्य के घर मे ही जाता हूँ, जघन्य 2 भव उत्कृष्ट 6 भव कर सकता हूँ।

.....

6. मेरा जघन्य कालादेश दस हजार अधिक अन्तमुहूर्त्त है और उत्कृष्ट कालादेश एक सागरोपम झाझेरा 22 हजार वर्ष है।

.....

7. मेरे घर में संज्ञी मनुष्य नौ गमक से आता है पर जाता नही है। जघन्य उत्कृष्ट 2 भव ही करता है।

.....

8. मुझमें चार शरीर पाये जाते हैं, मनुष्य के घर में नही जाता हूँ। मेरे कुल कितने नाणत्ता है।

.....

9. मेरी उत्कृष्ट अवगाहना छः गाऊ होती है।

.....

10. मैं उत्कृष्ट गमकों से किसी भी घर में जाऊँ तो अवगाहना का नाणत्ता नहीं पड़ता हैं।

.....

प्रश्न 5 सही/गलत बताईये– **10**

1. अपर्याप्त औदारिक जीवकाल करके मुनष्य में जावे तो अध्यवसाय अशुभ होते हैं। ( )

2. पृथ्वी, पानी, वनस्पति के घर में 26 जीव जावे तो आगति स्थान 78 होते है। ( )

3. जाने वाले की स्थिति उत्कृष्ट हो, वहाँ जघन्य पाता हो तो उत्कृष्ट से औधिक गमक बनता है। ( )

4. युगलिक काल करके देवलोक में जावे तो अपनी स्थिति से अधिक स्थिति नहीं पाता है। ( )

5. 3 विकलेन्द्रिय के तीन घरों में 5 स्थावर और तीन विकलेन्द्रिय जाते हैं तो जघन्य 2 भव उत्कृष्ट 8 भव के कुल 120 गमक होते हे तो 60 गमक कम हुए। ( )

6. औदारिक के 10 घरों में असंज्ञी मनुष्य छः गमकों से नहीं जाता है तो 60 गमक कम हुए। ( )

7. संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य के घर में औधिक से उत्कृष्ट गमक से जाता है तो जघन्य 2 भव उत्कृष्ट 8 भव करता है। ( )

8. पृथ्वीकाय के घर में वनस्पति के जीव जघन्य गमक से जावे तो लेश्या का नाणत्ता पड़ता है। ( )

9. दो विवक्षित स्थानों में गमनागमन करते हुए परस्पर कुल जितने भव होते है उसे भवादेश कहते हैं। ( )

10. दो सागरोपम झाझेरा वाला दूसरे देवलोक का देवता काल करके पृथ्वी पानी, वनस्पति में उत्पन्न हो सकता है। ( )

प्रश्न 6. जोड़ी मिलाइएः- **10**

1. भवनपति	(A) 888 गमक	.....
2. तेउकाय	(B) 928 गमक	.....
3. मनुष्य	(C) 29 णाणत्ता	.....
4. वाणव्यन्तर	(D) 135 गमक	.....
5. ज्योतिषी	(E) 96 गमक	.....
6. बेइन्द्रिय	(F) 206 णाणत्ता	.....
7. नैरयिक	(G) 102 गमक	.....
8. 5 स्थावर	(H) 45 गमक	.....
9. उत्कृष्ट के गमक	(I) 89 णाणत्ता	.....
10. जघन्य 2 भव उ. असंख्यायतभव	(J) 450 गमक	.....

प्रश्न 7. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए- **8**

1. पृथ्वीकाय के घर में जाने वाले अंसज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति कितनी होती है ?

.....

2. सज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय के घर में सातवी पृथ्वी का नैरयिक उत्कृष्ट गमको से जावे तो जघन्य-उत्कष्ट कितने

भव करता है ?

.....

3. ज्यातिषी में तीसरे गमक से जाने वाले युगलिक मुनष्य की जघन्य स्थिति कितनी होती है ?

.....

4. संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय के घर में संज्ञी मनुष्य जावे तो परस्पर गमनागमन का सर्वाधिक काला देश किन गमकों से होता है ?

.....

5. संज्ञी मनुष्य के घर में उत्कृष्ट से उत्कृष्ट गमक से जावे तो कितने भव करता है ?

.....

6. तिर्यंच युगलिक पहले देवलोक में उत्पन्न हो तो उत्कृष्ट कालादेश कितना देश होता है ?

.....

7. अप्पकाय के घर में वनस्पतिकाय का जीव जावे तो उत्कृष्ट कितने भव करता है ?

.....

8. पहले-दूसरे देवलोक में औधिक से उत्कृष्ट गमक से जाने वाले युगलिक मनुष्य की अवगाहना कितनी होती है ?

.....

प्रश्न 8. माहेन्द्र देवलोक का एक देवता जलचर में उत्कृष्ठ से जघन्य गमक से आया तो उसका जघन्य कालादेश कितना होगा ? उसी देवलोक का दूसरा देव उरपरिसर्प में जघन्य से उत्कृष्ठ गमक से आए तो उत्कृष्ट कालादेश कितना होगा ? **2**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2017

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 आगम

पूर्णांक : 100

नाम.....पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम.....जन्मतिथि.....मोबाइल.....रोल नं.....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर, दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान है तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :- **10**

1. आर्तममनोज्ञानां ..... तद्विप्रयोगायस्मृतिसमन्वाहारः ।
2. धम्मसद्धाए णं ..... रज्जमाणे विरज्जइ।
3. ..... य अणगारे चत्तारे केवलिकम्मंसे खवेइ ।
4. ..... भाज्या युगपदैकोनविं शंतेः ।
5. ..... णं अपुरक्कारं जणयइ ।
6. भक्त पच्चक्खाणेणं अणेगाइं ..... निरूभ्भइ ।
7. स गुप्ति-समिति ..... परिषहजयचारित्रैः ।
8. परमात्मनिन्दा प्रशंसे सदसद्गुणाच्दादनोदभावने च ..... ।
9. अणुत्तराए धम्मसद्धाए ..... हव्वमागच्छइ ।
10. सव्वविसएसु विरज्जमाणे ..... करेइ ।

प्रश्न 2. गाथा में दिए गए गलत शब्द को रेखांकित करके कोष्टक में ''गलत'' लिखें। गाथा सही है तो कोष्ठक में 'सही' शब्द लिखें ? **7**

1. सब्भाव-पच्चक्खाणेणं अनियट्टि जणयइ । ( )
2. वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चगोयं कम्मं निबन्धइ । ( )

3. नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदं यथाक्रमा प्राग्ध्यानाम् । ( )

4. अल्पारम्भपरिग्रहत्वं, स्वभावमार्दवार्जवं च मानुषस्य । ( )

5. जगत्कायस्वभावौ य संवेग वैराग्यार्थमं । ( )

6. सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ, न य संकिलिस्सइ । ( )

7. एकादयो भाज्या युगपदैकनिविं शतेः। ( )

प्रश्न 3. भावार्थ लिखिए – **20×2 = 40**

1. धम्मकहाए णं निज्जरं जणयइ। धम्मकहाए णं पवयण पभावेइ ।

पवयणप्रभावे णं जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए निबन्धइ ।।

.....

.....

2. लाभालामें सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा। समो निन्दा-पसंसासु तहा माणावमाणओ।।

.....

.....

3. जया य से सुही होइ तथा गच्छइ गोयरं । भत्तपाणस्स अट्ठाए बल्लराणि सराणि य।।

.....

.....

4. सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्त वियोजक दर्शन मोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः।

.....

.....

5. आरत्रवनिरोधः संवरः। स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षा-परीषहजयवचारित्रैः।

.....

.....

6. अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं । तव-नियम- संजमघरं सीलड्ढं गुणआगरं ।

.....

.....

7. चारत्रिगुणे य णं जीवे विवित्रारे, दढचरित्रे, एगन्तरए, मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंठिं निज्जरेइ ।

.....

.....

8. जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहियं कम्मं बन्धइ सुहपूरिसं, दुसमयठिइमं ? तं पढमसमए बद्धं विइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिण्णं।

तं बद्धं, पट्ठं, उदीरियं, वेइयं, निज्जिण्णं सेयाले अ अकम्मं चावि भवइ ।

.....

.....

.....

9. निच्चं भीएणं तत्थेण दुहिएण वहिएंण य ।

परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइयामइ ।

.....

.....

10. आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षकग्लानगुणकुलसङ्घसाधुसमनोज्ञानम् ।

.....

.....

11. दर्शनचारित्रमोहनीयकषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्या-त्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबंध्याप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण संज्वलन-वि कलपाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाहास्यख्यरतिशौकभयजुगुप्सास्त्रीपुंनुपुंसकवेदाः।

.....

.....

.....

.....

12. खमावणयाए ण पल्हायण भावं जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाण-भूय-जीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ। मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

.....

.....

13. नाणसंपन्नयाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसार-कन्तारे न विणस्सइ। जहा सूई ससुत्ता, पडिवा वि न विणस्सइ। तहा जीवे सुसुत्ते, संसारे न विणस्सइ। नाण-विणय-तव- चरित्रजोगे संपाउणइ, ससमय-परसमयसंघाय-णिज्जे भवइ।

.....

.....

.....

14. गुरु-साहम्मियसुस्ससूसणयाए ण विणयपंडिवतिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय मणुस्स-देव-दोग्गइओ निरुम्भइ।

.....

.....

.....

15. सुग्गीते नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए। राया बलभद्दे त्ति मिया तस्साडग्गमाहिसी।

.....

.....

.....

16. असीहि अभसिवण्णहिं भल्लीहिं पट्टिसेहि य। छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य ओइण्णो पावकम्मुणा।

.....

.....

.....

17. जारिसो माणुसे लोए ताया, दीसन्ति वेयणा, एत्तो अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा।

.....

.....

.....

18. तुहं पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य। खाविओ मि समंसाइं अग्गिवण्णाइं णेगंसो।

.....

.....

.....

19. एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेय अणेगओ। मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं।

.....

.....

.....

20. पंचमहव्वजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिमुत्तो य। सब्भिन्तर-बहिरओ तवोकम्मंसि उज्जुओ।

.....

.....

.....

प्रश्न 4. नीचे दिए गए भावार्थ का मूल पाठ लिखिए - **10×3 = 30**

1. निर्वेद से जीव देव, मनुष्य और तिर्यंज संबंधी कामभोगों से शीघ्र ही विराग को प्राप्त होता है, (क्रमशः) सभी विषयों से विरक्त होता है समस्त विषयों से विरक्त होकर आरम्भ का त्याग कर देता है। आरम्भ परित्याग करके संसार मार्ग का विच्छेद करता है और सिद्धिमार्ग को प्राप्त होता है।

.....

.....

.....

2. निज आत्मा में, पर आत्मा में या दोनों में विद्यमान दुःख, शौक, ताप आक्रन्दन, वध और परिवेदन, ये असातावेदनीय कर्म के बंध हेतु है।

.....

.....

3. प्राणिमात्र पर मैत्री-वृति, गुणाधिकों पर प्रमोद-वृति, दुःखि तो पर करूणावृति और अविनीतजनों पर माध्यस्थवृत्ति रखना चाहिए ।

.....

.....

4. ऋजुता से जीव काया की सरलता, भावों (मन) की सरलता, भाषा की सरलता और अविसंवादता को प्राप्त करता है। अविसंवाद- सम्पन्नता से जीव (शुद्ध), धर्म का आराधक होता है।

.....

.....

.....

5. मनकी समाधारणता से जीव एकाग्रता प्राप्त करता है। एकाग्रता प्राप्त करके ज्ञान पर्यवो को प्राप्त करता है, ज्ञान पर्यवो को प्राप्त करके सम्यक्त्व को विशुद्ध करता है और मिथ्यात्व की निर्जरा करता है।

.....

.....

6. उसके बाद वह औदारिक, तेजस् और कार्मण शरीर को सदा के लिए सर्वथा परित्याग कर देता है। संपूर्णरूप से इन शरीरों से रहित होकर वह ऋजुश्रेणी को प्राप्त होता है और एक समय में अस्पृशद्गतिरूप ऊर्ध्वगति से बिना मोड़ लिए (अविग्रह रूप से) सीधे वहाँ (लोकाग्र में) जाकर साकारोपयोगयुक्त (ज्ञानापयोगी अवस्था में) सिद्ध होता है, बुद्ध होता है, मुक्त होता है, परिनिर्वाण को प्राप्त होता है और दु:खों का अंत कर देता है।

.....

.....

.....

.....

7. जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानराग, सुखानुबंध और निदानकरण मारणान्तिकी संलेखना के ये पांच अतिचार है।

.....

.....

8. तीव्रभाव, मदंभाव, ज्ञातभाव, अज्ञातभाव, वीर्य, और अधिकरण की विशेषता से उस आश्रव में विशेषता अर्थात् न्यूनाधिकता होती है।

.....

.....

9. सहाय के प्रत्याख्यान से जीव एकीभाव को प्राप्त होता है एकीभाव को प्राप्त साधक एकाग्रता की भावना करता हुआ विग्रहकारी शब्द, वाक्कलहं (झंझट) कलह (झगड़ा) कषाय तथा तूत्तू मैं-मैं आदि से सहज ही मुक्त हो जाता है। संयम और संवर में आगे बढ़ा हुआ वह समाधि सम्पन्न हो जाता है।

.....

.....

.....

10. वाचना से जीव कर्मों की निर्जरा करता है। श्रुत की अशातना से दूर रहता है। श्रुत की अशातना से दूर रहता है। श्रुत की अनाशातना में प्रवृत हुआ जीव तीर्थधर्म का अवलम्बन लेता है। तीर्थधर्म का अवलम्बन लेने वाला साधक महानिर्जरा और महापर्यवसान करता है।

.....

.....

.....

प्रश्न 5. गाथाओं को जोड़ने वाले चरणों से रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए:- **8**

1. सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ .....

..... चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ।

2. विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं .....

..... तओ पच्छा चाउरन्त संसारकन्तारंवीइवयइ।

3. चक्खिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु .....

..... पुव्वबद्धं च निज्जरेइं।

4. वीयरागयाए णं नेहाणुबन्धणाणि .....

..... सचित्राचित्त-मीसएसु चेव विरज्जइ।

प्रश्न 6. तत्वार्थ सूत्र का दशवाँ अध्ययन सूत्र रूप में लिखिए ? **5**

.....

.....

.....

.....

.....